

समाजवादी दृष्टि

प्रधान सम्पादक-
आर्य रामलाल प्रजापति
Email- samajwadi_drishti@yahoo.com

वर्ष-44 अंक-20

दि. 11 से 17 मई 2026 (प्रति सोमवार) महु-इंदौर

पृष्ठ-8 मू. 2 रु.

दिलीप घोष से अग्निमित्रा पॉल तक...

शुभेंदु अधिकारी के साथ किन-किन लोगों ने ली मंत्री पद की शपथ



भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता सुबेंदु अधिकारी ने भाजपा विधायक दल के नेता चुने जाने के बाद पश्चिम बंगाल के अगले मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। यह निर्णय कोलकाता में नव निर्वाचित भाजपा विधायकों की एक महत्वपूर्ण बैठक में लिया गया, जिसमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सहित पार्टी के वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। अधिकारी का मुख्यमंत्री पद पर आना राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत के बाद हुआ है, जिसमें भवानीपुर में टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी के खिलाफ उनकी हाई-प्रोफाइल जीत भी शामिल है।

शुभेंदु अधिकारी के साथ पांच मंत्रियों ने शपथ ली

-भाजपा नेता क्षुदिराम टुडू ने मंत्री पद की शपथ ली
-पश्चिम बंगाल सरकार में भाजपा नेता क्षुदिराम टुडू ने मंत्री पद की शपथ

ली।

-भाजपा नेता अशोक कीर्तनिया ने मंत्री पद की शपथ ली

-पश्चिम बंगाल सरकार में भाजपा नेता अशोक कीर्तनिया ने मंत्री पद की शपथ ली।

-भाजपा नेता दिलीप घोष ने मंत्री पद की शपथ ली

-पश्चिम बंगाल सरकार में भाजपा नेता दिलीप घोष ने मंत्री पद की शपथ ली।

-भाजपा नेता अग्निमित्रा पॉल ने शपथ ली

-पश्चिम बंगाल सरकार में भाजपा नेता अग्निमित्रा पॉल ने मंत्री पद की शपथ ली।

-मकखनलाल सरकार को सम्मानित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी का भावुक क्षण

प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिम बंगाल में भाजपा के वरिष्ठतम कार्यकर्ताओं में से एक मकखनलाल सरकार को सम्मानित किया और उनका आशीर्वाद लिया।

1952 में, माखनलाल सरकार को कश्मीर में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के साथ भारतीय तिरंगा फहराने के आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था। 98 वर्ष की आयु में, श्री माखनलाल सरकार स्वतंत्रताोत्तर भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़े शुरुआती जमीनी स्तर के नेताओं में से एक हैं।

पीएम का विनम्र अंदाज, बंगाल की जनता को किया दंडवत प्रणाम

एक ऐतिहासिक राजनीतिक परिवर्तन के तहत, शुभेंदु अधिकारी ने कोलकाता के ब्रिगेड पेरड ग्राउंड में राज्यपाल आरएन रवि द्वारा पश्चिम बंगाल के पहले भाजपा मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। अधिकारी राज्य के नौवें मुख्यमंत्री बने हैं, जिससे ममता बनर्जी के 2011 में शुरू हुए 15 साल के शासन का प्रभावी रूप से अंत हो गया है। यह ऐतिहासिक समारोह तृणमूल कांग्रेस के एक दशक से अधिक के शासन के बाद राज्य के नेतृत्व में एक बड़े बदलाव का संकेत देता है।

शपथ ग्रहण समारोह के अलावा, कोलकाता के ब्रिगेड पेरड ग्राउंड में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दर्शकों के प्रति किया गया हावभाव चर्चा का मुख्य विषय बन गया। गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, प्रधानमंत्री ने भीड़ के सामने पूरी तरह से सिर झुकाया, इस भाव ने ऐतिहासिक आयोजन के लिए एकत्रित हजारों लोगों के मन पर गहरा प्रभाव डाला। इसके अलावा, प्रधानमंत्री नरेंद्र

सुरक्षा का भरोसा
सुबेंदु की बड़ी चुनौति

भाजपा में लोकतंत्र है और नेतृत्व के आशीर्वाद व सभी विधायकों की इच्छा से मुझे चुना गया है। केंद्र के साथ मिलकर काम करेंगे। जनता से किए सभी वादे पूरे करेंगे। राज्य में कानून का राज कायम होगा। कोई भी कानून अपने हाथ में नहीं ले। हर मामले की समीक्षा होगी और कानूनी कार्यवाई की जाएगी।

-सुबेंदु अधिकारी

'समान नागरिक संहिता के लिए जन सहयोग जरूरी'

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने कहा है कि जनसंख्या नियंत्रण नीतियों और समान नागरिक संहिता (यूसीसी) के क्रियान्वयन के लिए जन सहयोग आवश्यक है। जाति आधारित राजनीति तभी समाप्त होगी, जब समाज स्वयं जातिगत पहचान से ऊपर उठेगा। उन्होंने उक्त बातें 'राष्ट्रीय विकास की उत्प्रेरक' के रूप में सामाजिक समरसता विषय पर व्याख्यान देने के बाद आयोजित संवाद कार्यक्रम में कहीं। उन्होंने विभिन्न धर्म और समुदायों के बीच सौहार्द पर बल दिया। लोगों से नारेबाजी के स्थान पर आचरण के माध्यम से सामाजिक जीवन में समानता अपनाने का आग्रह किया।



आपने कहा कि समाज जाति को याद रखता है, इसलिए राजनेता उसका लाभ उठाते हैं। उनका उद्देश्य वोट प्राप्त करना होता है। यदि उन्हें काम के आधार पर वोट नहीं मिलते तो वह जाति के आधार पर वोट हासिल करेंगे। जनसंख्या नियंत्रण विधेयक और समान नागरिक संहिता से जुड़े एक सवाल के जवाब में संघ प्रमुख ने कहा कि आर एसएस सरकार नहीं बल्कि एक सामाजिक संगठन है। कोई भी कानून तभी सफल हो सकता है जब उसे जनता का सहयोग मिले। उन्होंने कहा कि पहले लोगों को शिक्षित करना जरूरी है। नीति आवश्यक है, लेकिन नीति तभी सफल होगी जब जनता का भरपूर सहयोग मिलेगा। आपातकाल के दौरान अपनाए गए जनसंख्या नियंत्रण उपायों का उल्लेख करते हुए भागवत ने कहा कि आक्रामक तरीके से लागू की गई नीतियों के कारण जनता में असंतोष पैदा हुआ था। राजनीतिक प्रक्रिया भी देखने को मिली थीं।



मोदी ने पश्चिम बंगाल में एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान भाजपा के वरिष्ठतम कार्यकर्ताओं में से एक, अनुभवी भाजपा कार्यकर्ता मकखनलाल सरकार का आशीर्वाद लिया। 98 वर्ष की आयु में भी, सरकार स्वतंत्रताोत्तर भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़े शुरुआती

जमीनी स्तर के नेताओं में से एक हैं।

यह समारोह उस दिन आयोजित हुआ जो बंगाली पंचांग के अनुसार गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के साथ संयोगवश और भी महत्वपूर्ण हो गया। इस भव्य समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और कई केंद्रीय मंत्रिमंडल मंत्री उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, भाजपा शासित विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय पार्टी के शीर्ष नेता भी इस ऐतिहासिक परिवर्तन के साक्षी बनने के लिए मौजूद थे।

शुभेंदु की शपथ में जिस बुजुर्ग के पीएम मोदी ने पैर छुए, वो कौन हैं?

पश्चिम बंगाल के पहले मुख्यमंत्री के रूप में सुबेंदु अधिकारी के शपथ

ग्रहण समारोह से पहले, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता माखनलाल सरकार को सम्मानित किया और उनका आशीर्वाद लिया। इस भव्य भाव ने सबका ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि



प्रधानमंत्री ने उनके पैर छुए, उन्हें शॉल भेंट की और मंच पर उनसे भावभीनी बातचीत की। यह इशारा पश्चिम बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत के जश्न के दौरान किया गया, जहां पार्टी ने पहली बार राज्य में सरकार बनाई।

मैं महु हूं! मेरा दर्द न जाने कोई

धैर्य की परीक्षा कब तक

किसी भी शहर में जब विकास होता है तो थोड़ी परेशानी तो जनता को होती है, किंतु इंदौर और उसके आस-पास शहरों में पिछले दो वर्षों से फ्लाई ओवर (पुल निर्माण) का कार्य चल रहा है, इन फ्लाई ओवर के आस-पास वाहनों को निकलने के लिए यातायात सुगम नहीं है पुल निर्माण के दोनों ओर सड़क अच्छी होना आवश्यक है। कई बार इन सड़कों पर जाम लगता है, दुर्घटना में लोगों की मृत्यु तक हुई है। निर्माण एजेंसियों को चाहिए कि निर्माण स्थल पर यातायात का संचालन व्यवस्थित हो, ओवर ब्रिज के दोनों ओर सड़क दुरुस्त हो, उन पर यातायात सुगम होना चाहिए। लोगों के धैर्य की भी एक सीमा होती है। प्रशासन को चाहिए कि वह जनता के धैर्य की परीक्षा न लें। ओवर ब्रिज निर्माण के दोनों ओर नागरिकों की यात्रा सुगम हो, यातायात सुरक्षा में यह पहली प्राथमिकता हो। -सम्पादक

आर्य समाज महु की नवीन कार्यकारिणी का गठन

महु। आर्य समाज महु द्वारा नवीन कार्यकारिणी वर्ष 2026-27 का गठन साप्ताहिक रविवारीय यज्ञ के पश्चात् किया गया। प्रातः प्रथम सत्र में यज्ञ के तत्पश्चात् भजनोपदेशक हरिओम सरल तथा सुनीति आर्य एवं श्री प्रकाश आर्य के सुमधुर भजन व आध्यात्मिक मार्गदर्शन से सत्र संपन्न हुआ।

द्वितीय सत्र में आर्य रामलाल प्रजापति की अध्यक्षता में एक बैठक संपन्न हुई। जिसमें गहन विचार विमर्श एवं सर्वसम्मति से नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। श्री प्रकाश आर्य- प्रधान, आर्य राधेश्याम बियाणी- उप-प्रधान, श्रीधर गोस्वामी- मंत्री, राजेश नेनावा-कोषाध्यक्ष, द्रोणाचार्य दुबे एवं सुनिधि शर्मा द्वय उपमंत्री बनाये गये। सभी सदस्यों ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाईयां दी।

100 नं वाले एडवोकेट शैलेंद्र मिश्रा स्टेट बार काउंसिल के सबसे सशक्त उम्मीदवार

इन्दौर। इंदौर हाई कोर्ट वकील मिलनसार, व्यवहारिक कार्यों के प्रति निष्ठा रखने वाले, वकीलों के दर्द को नजदीक से जानने वाले एडवोकेट श्री शैलेंद्र मिश्रा ठस्टेट बार काउंसिल ठ मध्यप्रदेश ठ इंदौर जिले के सबसे सशक्त उम्मीदवार दिखाई पड़ रहे हैं। उन्हें धार, खरगोन, झाबुआ, उज्जैन व इन्दौर जिलों के वकीलों का पूर्ण रूप से समर्थन मिल रहा है। श्री मिश्रा अपनी लगनशीलता, कर्तव्यनिष्ठता एवं कार्य के प्रति जुझारूपन के कारण सबसे अधिक लोकप्रिय उम्मीदवार हैं। उनकी स्थिति सबसे मजबूत दिखाई दे रही है। उनका चुनाव में नं. 100 है।

बंगाल में पहली बार भाजपा

पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के नतीजे बताते हैं कि आजादी के बाद पश्चिम बंगाल में पहली बार भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला। पश्चिम बंगाल में पहले लेफ्ट की सरकार रही, फिर 15 साल ममता बेनर्जी की तृणमूल कांग्रेस की सरकार सत्ता में रही। किन्तु पं. बंगाल में आजादी के बाद जो विकास होना था, नहीं हुआ? विकास व रोजगार के अवसर भी बंगाल की जनता को नहीं मिले। विकास तो दूर बंगाल में सत्तारूढ़ राजनीतिक 'दलों' ने प्रदेश की जनता का शोषण ही किया, विकास के लिए केंद्र सरकार की अनेक कल्याणकारी योजनाओं को भी लागू नहीं होने दिया, न बे.उद्योग धंधे स्थापित किये, न ही महिलाओं के कल्याण के कार्य हेतु योजनाएँ बनाई? बंगाल में महिलाओं के साथ आए दिन होने वाली बर्बरता, आये दिन समाचार पत्रों की में सुर्खियों में छपती रहीं महिलाओं पर होने वाले अत्याचार की घटनाएँ।

विपक्षी दलों के राजनीतिक कार्यकर्ताओं

के साथ सत्तारूढ़ पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा उनके साथ अभद्रता, लाई झगे. करने, उन पर हमला किया जाता, महिलाओं के साथ अभद्रता होती रही। एक प्रकार से जंगल राज्य की स्थिति पं. बंगाल में देखी जा सकती थी। सत्तारूढ़ पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा आये दिन विपक्षी दलों के कार्यकर्ताओं, विशेष कर भाजपाइयों के साथ जो अभद्र व्यवहार किया जाता था। उनपर हमले किए जाते, उनकी हत्या कर पे.से लटका दिया जाता था। ऐसे विभ्रम दृश्य देखकर लोग कांप उठते थे। तृणमूल के शासनकाल में 300 से अधिक भाजपा के कार्यकर्ताओं का बलिदान हुआ है। बंगाल से जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्र की एकता व राष्ट्रवाद के लिए अपना बलिदान दिया था। रे सब बलिदान राष्ट्र के लिए ही हुए हैं, देश की जनता इसे कभी भुला नहीं सकती।

पिछले चुनाव में भाजपा ने प्रदेश के

कद्दावर नेता व तत्कालीन राष्ट्रीय महामंत्री कैलाश विजयवर्गी को प्रभारी बनाया था। उन्होंने पश्चिम बंगाल में जो कार्य किया उससे ममता बनर्जी की पार्टी के लोगों में खलबली मच गई थी। सत्ता पक्ष के कार्यकर्ताओं ने उन पर झूठे-झूठे मुकदमे लगा दिए थे। किन्तु 'कैलाश विजयवर्गी का समर्पण भाव से किया गया कार्य का असर अब इस चुनाव में नजर आया।' कार्यकर्ताओं का समर्पण भाव से किया गया कार्य कुछ समय बाद ही असर दिखाता है। बंगाल की जनता ने प्रधानमंत्री मोदी के भय के स्थान पर विश्वास का नारा दिया जो बंगाल की जनता को पसंद आया। वहीं सुवेंदु अधिकारी व उनके लाखों कार्यकर्ताओं की लंबे समय तक कष्ट उठाकर पार्टी का कार्य करते रहना, जनता के दुःख दर्द में शामिल होना, जनता के आंसू पोछने का परिणाम है बंगाल में वर्ष 2026 के चुनाव। पश्चिम बंगाल में भाजपा

की रीति से वहां की जनता प्रभावित हुई। उसने भाजपा की विकास की योजनाओं को समझा। बंगाल की जनता भी विकास चाहती है, रोजगार चाहती है, व्यापार व्यवसाय बढ़ाना चाहती है, साथ ही सुखी व भय मुक्त जीवन जीना चाहती है। इसी का परिणाम है पश्चिम बंगाल में भाजपा की विजय।

अब भाजपा को बंगाल में जनता के लिए कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से विकास के साथ जनता को भय मुक्त शासन के साथ विकास का मार्ग अपनाना होगा। यही जीत की असली ताकत होगी, इसी से बंगाल की जनता को भाजपा पर भरोसा कायम रहेगा।



-आर्य रामलाल
प्रजापति, सम्पादक

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जब 1951 में जनसंघ की नींव रखी थी तब से लेकर अबतक एक लंबा राजनीतिक सफर इस पार्टी को यहाँ तक पहुंचने में तय करना पड़ा इस दरम्यान इसे 1977 में जनता दल में विलय करना पड़ा था उसके बाद जनता दल के बिखराव के बाद ये भारतीय जनता पार्टी के रूप में अपने आप को स्थापित किया और उस समय से लेकर आज तक इसे कई उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ा। कभी भारतीय जनता पार्टी के दो सांसद सदन में थे। वहाँ से उठकर आज भारतीय जनता पार्टी देश के अधिकतर हिस्से में भगवा ध्वज फहराने में सफल हो चुका है। चार मई को बंगाल के विधानसभा का चुनाव परिणाम आया तो यह तय हो गया कि दक्षिण भारत के कुछ राज्यों को छोड़कर अब भारत में राष्ट्रवाद के एक नए युग का शुरुवात हो चुका है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर मुस्लिम परस्त दलों के सफाए का समय आ गया है। अब इस देश में अब सिर्फ राष्ट्रवादी या कट्टर राष्ट्रवादी राजनीतिक दलों का बोलबाला ही रहने वाला है। अब इस देश में वंशवादी क्षेत्रीय दलों के दिन लद गए हैं। राष्ट्रीय जनता दल जिसको लालू परिवार अपनी बपौती बना रखा है उसी तरह समाजवादी पार्टी को मुलायम सिंह के परिवार ने अपनी बपौती बना रखा है। ममता के बाद उसके भतीजे अभिषेक बनर्जी ने तृणमूल कांग्रेस को अपना जागीर बना रखा है। उसी तरह तमिलनाडु में स्टालिन और उसके बेटे का डी एम के पर कब्जा है, यही हाल मायावती का है कुल मिलाकर भारत की सभी क्षेत्रीय दलों का कमोबेश यही हाल है। ममता बनर्जी को ये विश्वास नहीं था कि वह चुनाव हार सकती हैं क्योंकि पिछले चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के गुंडों ने बंगाल में निष्पक्ष चुनाव होने ही नहीं दिया था। तृणमूल कांग्रेस के गुंडों का बंगाल में ऐसा खौफ था कि

में बोलूंगा तो बोलोगे कि बोलता... है

-डॉ. संजय श्रीवास्तव, महू

बंगाल का चुनाव परिणाम राष्ट्रवाद का युद्धघोष है

लोग चुनाव में हिस्सा लेने से डरते थे। इस बार सेंट्रल फोर्स की तैनाती और चुनाव आयोग की तत्परता ने ममता बनर्जी के मंसूबों पर पानी फेर दिया। इस बार के चुनाव में जनता ने दिल खोलकर वोट दिया ये उसी का परिणाम है कि ममता बनर्जी के 15 साल के शासन का अंत हो गया। ममता बनर्जी अपना कलेजा पीट रही हैं उसको ये विश्वास ही नहीं हो रहा है कि वह खुद चुनाव हार गई है। बेशर्मी की हद तो देखिए वह अपना इस्तीफा भी नहीं दे रही है ये उसके मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है। सच पूछिए तो बीजेपी पिछले चुनाव में ही जीत का स्वाद चख लेती लेकिन उस समय किसी को ये पता नहीं था कि ममता बनर्जी के सरकारी तंत्र और गुंडे इस तरह चुनाव में गड़बड़ी करते होंगे। इस बार चुनाव आयोग ने ममता के सारे अधिकारियों को जिनपर चुनाव में गड़बड़ी करने का शक था उन सब को चुनावी प्रक्रिया से दूर रखा और इसका परिणाम ये हुआ कि इस बार चुनाव भयमुक्त और साफ सुथरे तरीके से सम्पन्न हुआ। दूसरी बात ये हुई कि मुसलमानों के वोट अगर एकमुश्त ममता बनर्जी को पड़ा तो उसके विरोध में हिंदुओं का भी एकमुश्त वोट बीजेपी को मिला। दरअसल बीजेपी को केवल हिंदुओं को जागृत करने की आवश्यकता थी और बीजेपी इसमें काफी हद तक सफल रही। अगर पूरे देश में हिन्दू एकजुट हो जाएं तो इन मुस्लिम परस्त पार्टियों का नाम लेने वाला कोई नहीं होगा। दरअसल इस देश के विपक्षी दल मुस्लिम वोटों के बदौलत ही अपनी जमीन तैयार करते हैं। अब बीजेपी भी खुलकर केवल हिंदुओं की बात करने लगी है क्योंकि बीजेपी को पता है कि मुसलमानों का

एक भी वोट बीजेपी को नहीं मिलने वाला है जबकि केंद्र और राज्य की किसी भी योजना का लाभ इस देश के हिंदुओं और मुसलमानों को बराबर रूप से मिलता है लेकिन मुसलमान अपने खून में बसे गद्दारी पन को नहीं छोड़ पाते हैं। हाल में कुछ पढ़े लिखे मुसलमान इस बात को समझने लगे हैं लेकिन इसके बावजूद जब चुनाव का समय आता है तो वे बीजेपी के खिलाफ ही वोट देते हैं। ममता बनर्जी के मुस्लिम परस्त होने के कारण ही हिंदुओं का वोट बीजेपी को मिला ये किसी क्रिया की एक प्रतिक्रिया थी। बांग्लादेश में हाल के दिनों में वहाँ जो हिंदुओं पर अत्याचार हुआ था उसका भी असर इस चुनाव में देखने को मिला। बीजेपी ने जिस तरह घुसपैठियों के मुद्दे को उठाया उसका भी असर इस चुनाव में हुआ। एस आई आर के चलते भी बहुत से फर्जी मतदान पर रोक लगी। वरना पहले बांग्लादेश से घुसपैठिए आकर चुनाव में वोट डाल देते थे और शाम को वापस बांग्लादेश चले जाते थे। वे दिहाड़ी मजदूर की तरह ये काम करते थे। इस बार केंद्रीय बल के आगे उनकी एक नहीं चली। इस बार महिलाओं का वोट भी बीजेपी को अधिक संख्या में मिली है। बंगाल के बाहर जो काम करने वाले लोग थे वे बीजेपी के शासन वाले राज्यों से आये थे और वे वहाँ बीजेपी के शासन को देख रहे थे इसलिए वे लोग जो बाहर से आये उनमें से ज्यादातर लोगों ने बीजेपी को वोट दिया। बंगाल के लोग रोजगार की तलाश में बाहर जाने से परेशान थे उन्हें बंगाल में ही रोजगार चाहिय था लेकिन पच्चीस वर्ष के वामपंथियों के शासन काल और उसके बाद पंद्रह साल के तृणमूल कांग्रेस

के शासन काल में बंगाल में सभी कल कारखाने बंद हो गए इसलिए लोगों को काम के लिए बाहर जाना पड़ा इससे लोगों में बहुत रोष व्याप्त था और उसकी परिणति इस चुनाव में देखने को मिली। महिला सुरक्षा भी इस चुनाव में बहुत बड़ा मुद्दा था जिसको ममता बनर्जी नहीं समझ सकी। जिस राज्य में उधोगों के विकास पर 1100 करोड़ खर्च हो वहाँ मंदिरों और मुसलमानों के बेहतरी के लिए 5000 करोड़ का बजट दिया जाता है तो ममता बनर्जी पर सवाल उठना लाजिमी है। हिंदुओं के त्योहारों पर बंदिशें लगाना भी ममता बनर्जी को भारी पड़ा। रामनवमी के जुलूस निकालने के लिए वहाँ के लोगों को कोर्ट की शरण लेनी पड़ती थी। दरसअल बंगाली स्मिता खतरे में पड़ गई थी। अगर अभी बीजेपी का शासन नहीं आता तो बंगाल में हिंदुओं की दशा कश्मीर जैसी होने वाली थी। अब बीजेपी को अपने हिन्दू वादी नीतियों को गंभीरता से लागू करने की आवश्यकता है। बीजेपी को बंगाल का मुख्यमंत्री शुभेन्दु अधिकारी को ही बनाना चाहिए ऐसा नहीं कि मध्यप्रदेश की तरह मोहन यादव को बना दे जबकि यहाँ शिवराज सिंह चौहान को ही मुख्यमंत्री बनाये रखना चाहिए था जिसके चेहरे पर बीजेपी को जीत मिली थी। बीजेपी का शीर्ष नेतृत्व कभी कभी अनोखा करने के चक्कर में बुरा भी कर जाती है। बंगाल की तरह असम में भी बीजेपी को जबरदस्त जीत मिली है वहाँ ऐसा ही होने वाला था। हाल के दिनों में मैं असम और बंगाल दोनों जगह से होकर आया था इसलिए मैं इसी चुनाव परिणाम की आशा भी कर रहा था। बंगाल में लोग पूरी तरह बदलाव



के मूड में थे। और असम में हेमंता के प्रति लोगों का आकर्षण जबरदस्त था। ये नहीं भूलना चाहिए कि इस बंगाल चुनाव में जीत के पीछे आर एस एस के संगठन का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है वंसल से लेकर यादव तक जीतने लोग आर एस एस के थे वे लोग अनवरत पर्दे के पीछे से अपना काम बखूबी अंजाम दे रहे थे। गृहमंत्री अमित शाह ने तो वहाँ कैम्प ही कर रखा था। मोदी योगी का चुनाव प्रचार भी हिन्दू मतदाता को लामबन्द करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। मोदी ने बंगाल के झालमुही को एक ब्रांड बना दिया। बंगाल में जब जब वोटों का प्रतिशत बढ़ा है तब तब सत्ता परिवर्तन हुआ है और सत्ता धारी दल शासन पर लंबे समय तक काबिज रहा है। उम्मीद है कि बीजेपी भी यहाँ अधिक समय तक राज करेगी। लोक सभा के चुनाव में बीजेपी को बंगाल बिहार और उत्तरप्रदेश से इस बार निश्चित तौर अधिक सीटें मिलेंगी। उड़ीसा में भी यही हाल होगा। बीजेपी को अब पंजाब पर ध्यान देना होगा। पंजाब में बीजेपी अभी कमजोर स्थिति में है। दक्षिण का किला फतह करने में बीजेपी को अभी और इंतजार करना पड़ेगा। तमिलनाडु में द्रविड़ युग की समाप्ति हो गई है। एक नई पार्टी टी वी के का उदय हो चुका है और ये फिल्मी स्टार की पार्टी है इसलिए इसका भविष्य तमिलनाडु जैसे राज्य में उज्ज्वल है। जोसेफ विजय चंद्रशेखर जो तमिल के सुपरस्टार है इसलिए वह भी एम जी आर की तरह अपनी छवि बना सकते हैं। पुदुचेरी में फिर से एनडीए की सरकार ही बनने जा रही है। केरल में वामपंथी दल का सफाया हो गया है और इसके साथ ही पूरे देश से वामपंथ का सफाया हो गया है। कांग्रेस के लिए वही एक संजीवनी बची है वरना कांग्रेस इस देश में कहाँ है ये चिराग लेकर दूढ़ने से भी नहीं मिलेगा।



मालवा एक्सप्रेस में अतिरिक्त कोच की मांग, यात्रियों को हो रही भारी परेशानी

महू। डॉ. अंबेकर नगर, महू से कटरा जाने वाली मालवा एक्सप्रेस में बढ़ती यात्रियों की संख्या को देखते हुए अतिरिक्त कोच बढ़ाने की मांग उठी है। अमरनाथ यात्रा के दौरान स्थिति और भी गंभीर हो जाती है, जब देशभर से बी. संख्या में श्रद्धालु यात्रा पर निकलते हैं।

स्थानीय अमरनाथ यात्रा समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेन और यात्रा संयोजक जगमोहन सोन ने रेल मंत्रालय के आर एम को ज्ञापन सौंपकर इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि यात्रा सीजन में लगभग 60 दिन पहले ही सभी सीटों का आरक्षण पूर्ण हो जाता है, जबकि आरएसी और प्रतीक्षा सूची भी लंबी हो जाती है।

महू कैंट (आर्मी क्षेत्र) और पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र होने के कारण भी इस ट्रेन में यात्रियों की संख्या लगातार अधिक

रहती है। ऐसे में यात्रियों को काफी असुविधा का सामना करना प रहा है।

समिति ने मांग की है कि मालवा एक्सप्रेस में एसी और जनरल कोच की संख्या बढ़ाई जाए, ताकि यात्रियों को राहत मिल सके और उनकी यात्रा सुगम हो सके। रेलवे प्रशासन से इस संबंध में शीघ्र कार्रवाई की उम्मीद जताई गई है।

बेहतर यातायात प्रबंधन के लिए, इंदौर ट्रैफिक पुलिस कर रही है हरसंभव प्रयास

इंदौर। शहर में सुगम सुरक्षित व सुखद यातायात हेतु पुलिस कमिश्नर इंदौर श्री संतोष कुमार सिंह के निर्देशन में यातायात प्रबंधन पुलिस द्वारा लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इसी की. में इंदौर यातायात प्रबंधन पुलिस द्वारा व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर-7049107620 जारी किया गया है।

उक्त हेल्पलाइन पर आने वाली शिकायतों पर ट्रैफिक पुलिस त्वरित निराकरण किया जा रहा है। यदि शिकायतें अन्य विभाग से जुड़ी होने पर ट्रैफिक पुलिस टीम द्वारा शिकायत की पुष्टि उपरांत जानकारी अन्य विभागों की ओर अग्रेषित भी की जा रही है। यातायात पुलिस की व्हाट्सएप हेल्पलाइन शुरू होने से हजारों शिकायतें प्राप्त हुईं, जिनका त्वरित निराकरण किया जा रहा है।

युवा एनसीसी कैडेट्स सड़क सुरक्षा जागरूकता में देंगे अपना योगदान

इंदौर। सड़क के उद्देश्य से पुलिस आयुक्त, नगरीय इंदौर श्री संतोष कुमार सिंह के दिशा निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (अपराध/मुख्यालय) श्री आर.के. सिंह एवं पुलिस उपायुक्त यातायात श्री राजेश कुमार त्रिपाठी के मार्गदर्शन में लगातार जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

इसी क्रम में यातायात प्रबंधन पुलिस द्वारा 1 एमपी एयर स्कवान एनसीसी, इन्दौर के कैडेट्स के लिए लीकॉलेज में आयोजित एनुअल ट्रेनिंग कैंप के दौरान 'सड़क सुरक्षा जागरूकता' के अंतर्गत एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य युवाओं में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करना था।

कार्यक्रम के दौरान एनसीसी अधिकारियों एवं यातायात पुलिस की टीम ने कैडेट्स को संबोधित करते हुए बताया कि एनसीसी का ध्येय वाक्य 'एकता और अनुशासन' है, जिसे हमें अपने दैनिक जीवन के साथ-साथ सड़क पर भी अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब भी हम सड़क पर वाहन चलाए या पैदल चलें, तो पूर्ण अनुशासन के साथ चलें और अन्य सड़क उपयोगकर्ताओं का सम्मान करें, क्योंकि यही सभी की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

कार्यशाला में वीथी एवं प्रेजेंटेशन के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओं की गंभीरता को समझाया गया तथा घायल व्यक्तियों की सहायता हेतु चलाई जा रही 'राहवीर योजना' की जानकारी दी गई। बताया गया कि यदि कोई व्यक्ति सड़क दुर्घटना में घायल की तुरंत मदद करता है और उसे अस्पताल पहुंचाता है, तो वह किसी की जान बचा सकता है। इसके साथ ही उसे शासन द्वारा प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाती है, और सबसे बी. संतुष्टि यह होती है कि उसकी सहायता से एक परिवार को संकट से बचाया जा सका।

कैडेट्स को रोचक तरीके से 'ट्रैफिक अल्फाबेट' के माध्यम से सड़क सुरक्षा

नियमों के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई। इस दौरान सड़क सुरक्षा संकेतक (साइन बोर्ड), रो मार्किंग, ब्लैक स्पॉट एवं ब्लाइंड स्पॉट, ट्रैफिक कंट्रोल के हैं साइन, ई-चालान प्रणाली, इविंग लाइसेंस प्राप्त करने की प्रक्रिया, यातायात संसाधन एवं यातायात पुलिस द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की गई।

यातायात पुलिस द्वारा सभी एनसीसी कैडेट्स से अपील की गई कि वे न केवल स्वयं यातायात नियमों का पालन करें, बल्कि अपने परिवार एवं समाज को भी इसके लिए प्रेरित करें। विशेष रूप से अपने माता-पिता एवं परिजनों को हेलमेट एवं सीट बेल्ट के उपयोग के लिए जागरूक करें। यह भी बताया गया कि बच्चों की बात को परिवार में गंभीरता से लिया जाता है, इसलिए उनका प्रयास सड़क सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

कार्यक्रम के अंत में एनसीसी कैडेट्स ने 'ट्रैफिक प्रहरी' अभियान से जुड़ा भविष्य में भी यातायात पुलिस का सहयोग करने का संकल्प लिया। एनसीसी अधिकारियों ने यातायात पुलिस के इस जागरूकता अभियान की सराहना करते हुए भविष्य में भी हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

स्तम्भ-मेरी राष्ट्रीय सोच

'सिर्फ चुनाव आयोग नहीं, लहू से सींचा है भाजपा कार्यकर्ताओं ने बंगाल में कमल'

कुछ लोग आज भी इस गलतफहमी में जी रहे हैं कि बंगाल में भाजपा को सत्ता चुनाव आयोग ने थाली में परोसकर दे दी। उन्हें लगता है कि 'सिर्फ', केंद्रीय बल या दिल्ली का दखल भाजपा को जिता गया। मगर ये बात कहने वाले न तो बंगाल की जमीन जानते हैं, न यहाँ की लाई।

'क्योंकि बंगाल का कमल बैलेट से पहले खून से खिला है।'

1. सैकड़ों लाशें, हजारों उजेड़े घर-

2011 से 2025 तक बंगाल में भाजपा के सैकड़ों कार्यकर्ता मारे गए। किसी को बम से उड़ा गया, किसी को पे.से लटकाया गया, किसी की लाश नदी में मिली।

हजारों घर फूँक दिए गए। नंदीग्राम हो या बीरभूम, कूचबिहार हो या बशीरहाट-चुनाव के बाद 'बदले' के नाम पर पूरे-पूरे गाँव खाली करवा दिए गए। सिर्फ इसलिए कि उन्होंने भाजपा को वोट दिया था। महिला मोर्चा की कार्यकर्ताओं को भी नहीं बख्शा गया। बलात्कार को राजनीतिक हथियार बनाया गया। तकिर बिठाया जा सके। 2021 के चुनाव बाद हुई हिंसा पर हाईकोर्ट तक को फँस जांच का आदेश देना पड़ा।

2. फिर भी मनोबल नहीं टूटा-

सोचिए, जिस पार्टी के बूथ अध्यक्ष की लाश सुबह पे.से लटकी मिले, दोपहर को उसका बेटा उसी बूथ पर एजेंट बनकर बैठता है-वो मनोबल EVM से नहीं आता।

जिस महिला का घर जला दिया गया, वो अगले चुनाव में फिर झंझ लेकर गली-गली घूमती है-वो हिम्मत चुनाव आयोग नहीं देता।

TMC के 34 साल के वाम शासन

और फिर 15 साल के अपने शासन में जो दहशत का माहौल बनाया गया, भाजपा के कार्यकर्ता ने उसे अपनी छाती पर झेला है। मुकदमे, जेल, सामाजिक बहिष्कार, रोजगार छिनना- सबकुछ सहा है।

3. 15 साल की तपस्या, तब जाकर फूल खिला-

2011 : 1 विधायक,
2016 : 3 विधायक,
2019 लोकसभा : 18 सांसद -पूरे देश में हकंप।

2021 विधानसभा : 77 विधायक, (मुख्य विपक्ष), 2024 लोकसभा : 20+ सीटें
2026 विधानसभा : सत्ता में भाजपा।

ये ग्राफ एक दिन में नहीं बना। ये उन माँताओं का इंतजार है जिन्होंने बेटों की तेरहवीं पर कसम खाई थी कि लाई रुकनी नहीं चाहिए। ये उन बस्तियों का सत्र है जो 10 साल रिलीफ कैंप में रहे, मगर झुके नहीं।

4. इसलिए गलतफहमी निकाल दें-

जो कहते हैं 'चुनाव आयोग ने जिता दिया।' (चुनाव आयोग का काम इमानदारी से चुनाव कराना होते हैं, वो आयोग ने किया।) वो उन कब्रों पर जाएँ जहाँ भाजपा का झंझ ओढ़े कार्यकर्ता सो रहे हैं। उन जले हुए घरों की राख छूकर देखें। उन महिलाओं की आँखों में देखें जिन्होंने सबकुछ खोकर भी पार्टी नहीं छोड़ी।

बंगाल में सत्ता किसी मशीन से नहीं मिली। यहाँ एक-एक वोट के पीछे एक-एक कुर्बानी है। 15 साल तक खून-पसीना बहाने के बाद, लाशें गिनने के बाद, तब जाकर आज बंगाल में कमल खिला है। ये सत्ता दिल्ली से नहीं,

बंगाल की गलियों से निकली है। और इसे कोई गलतफहमी में 'गिफ्ट' कह दे, तो ये उन शहीदों का अपमान है जिन्होंने लोकतंत्र की कीमत अपने प्राण देकर चुकाई है। विपक्षी दलों व अन्य नागरिकों को भी भाजपा कार्यकर्ताओं के खून-पसीने, त्याग और समर्पण का भाव जुड़ा है। इतना बड़ा समर्पण का भाव एक राष्ट्रवादी दल के कार्यकर्ता ही कर सकते हैं। अब भाजपा को बंगाल की राजनीति में परिवर्तन लाना होगा। विकास और राष्ट्रवाद की भावना बंगालियों में भरना होगी। कार्यकर्ताओं का बलिदान व्यर्थ न जाने देना चाहिए।

-एक भारतीय नागरिक

आपके पत्र

वर्ष 44, अंक 19, 4 से 10 मई के अंक में 'प्रशासनिक लापरवाही' शीर्षक से आपने जो संपादकीय लिखा है वह एकदम सही है। इस दुर्घटना के लिए प्रशासन ही जिम्मेदार है। बरगी बांध की यह बहुत ही दुःखद व हृदय विदारक घटना है यह।

बिटिया खुशबु का हृदय गति रुकने से असामयिक निधन का समाचार दिल को दहला गया। ईश्वर खुशबु की आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

ब्लडोनेशन की खबर आम लोगों को प्रेरित करेगी। महर्षि दयानंद सरस्वती एवं महात्मा बुद्ध इस देश की धरोहर हैं, इन्होंने मानवता, न्याय, सुख एवं शान्ति के लिए अभूतपूर्व कार्य किया।

-अजय प्रजापति, जमशेदपुर झारखण्ड।

बंगाल में भाजपा का प्रचंड बहुमत, ममता बनर्जी व उनके मंत्री चुनाव हारे?

पश्चिम बंगाल की राजनीति में बा. उलटफेर देखने को मिला है, जहाँ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने प्रचंड बहुमत हासिल करते हुए सत्ता पर कब्जा कर लिया है। चुनाव परिणामों के अनुसार भाजपा ने 208 विधानसभा सीटों पर जीत दर्ज की, जबकि तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) मात्र 79 सीटों पर सिमट गई। सबसे चौकाने वाला परिणाम भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र से सामने आया, जहाँ राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने 15,114 मतां से पराजित कर दिया। इसी प्रकार ममता बनर्जी के अनेक मंत्री भी चुनाव हार गये हैं। इस हार को राज्य की राजनीति में एक बे. बदलाव के रूप में देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह परिणाम बंगाल की सत्ता में बदलाव का संकेत है और आने वाले समय में राज्य की नीतियों और प्रशासनिक दिशा में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं।

आलेख

माँ-मातृ दिवस पर विशेष

माँ केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक एहसास है जो हमें सुरक्षा और प्रेम का अनुभव कराता है। वे निस्वार्थ प्रेम, त्याग और समर्पण की एक अनूठी मिसाल हैं। सुबह सबसे पहले उठने से लेकर रात को सोने तक माँ हर पल हमारी खुशी और सुख सुविधाओं का ख्याल रखती हैं। माँ तो वह शक्ति हैं जो हर मुश्किल में हमारे साथ खी. रहती हैं।

माँ जो जन्म का फूल है, प्यार करना उसका उसूल है दुनिया की मोहब्बत फिजूल है, माँ की हर दुआ कबूल है। ए. ईसा ... माँ को नाराज करना तेरी भूल है।

माँ के कदमों की मिट्टी जन्म की धूल है।

-ठाकुर सुरेंद्र सिंह, महू





लघुकथा पढ़ने में समय कम लगे पर पाठक श्रोता पर असर दीर्घ समय तक रहे

श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति ने किया एकविंसीय लघुकथा लेखन कार्यशाला का आयोजन

यूँ तो श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति में एक माह में लगभग 8-10 साहित्यिक आयोजन होते ही हैं, उद्देश्य हिन्दी भाषा साहित्य संवर्धन के साथ साहित्य के प्रति जन जागरण भी इसी शृंखला में गत दिनों एक दिवसीय लघुकथा लेखन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया तथा दिए गए विषय पर लघुकथा साहित्यकारों ने लिखी इसमें साहित्यकारों ने प्रतिभागिता की।

आरम्भ में माँ सरस्वती की प्रार्थना श्री राजेश शर्मा ने प्रस्तुत की। अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यशाला का शुभारम्भ किया। संचालन कर रहे परीक्षा शिक्षा मंत्री उमेश पारेख ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला एवं साहित्य मंत्री डॉ. पद्मा सिंह ने विषय प्रवर्तन किया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार श्री तरुण भटनागर ने अपने उद्बोधन में लघुकथा कहानी

और उपन्यासों पर चर्चा की व कहा कि हर कहानी के पीछे एक कहानी होती है। इस अवसर पर भोपाल से आयी डॉ. कान्ता राय ने भी विचार व्यक्त किए। श्री घनश्याम मैथिल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। स्वागत हरeram वाजपेयी, डॉ. मीनाक्षी स्वामी, घनश्याम यादव, अनिल भोजे, सुधा चैहान, सदाशिव कौतुक व मणिमाला शर्मा ने किया। समिति द्वारा लघुकथा आयोजन का उद्देश्य रहा कि इस विधा में बढ़ती हुयी संख्या में गुणवत्ता बनी रही।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. कान्ता राय ने की। इस सत्र में ज्योति जैन ने लघुकथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विषय पर अन्तरा करवे ने लघुकथा में कलापक्ष का महत्व एवं सृजनात्मक लेखन पर तथा वरिष्ठ लघुकथाकार श्री संतोष सुपेकर ने लघुकथा में विषय चयन पर विचार व्यक्त करते हुए मार्गदर्शन

दिया।

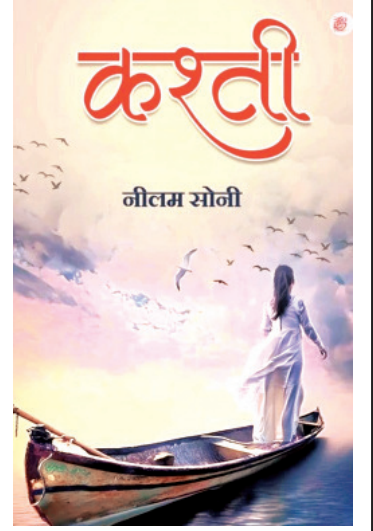
40 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। तीसरे सत्र में श्री सदाशिव कौतुक की लिखित चल जमूरे तथा परिन्दे 2 कहानियों पर बनी लघु फिल्में प्रदर्शित की गई। लिखी गई लघुकथाओं का मूल्यांकन श्री विजय जोशी, सुनीता प्रकाश एवं सीमा व्यास ने किया।

अंतिम सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार श्री सूर्यकान्त नागर ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि लेखक को अपनी सफलता को विश्वास में बदलना चाहिए, लिखने में जल्दबाजी न करें। डॉ. प्रीति सिंह देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के मुख्य अतिथि ने भी उद्बोधित किया। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये। आभार प्रधान मंत्री श्री अरविन्द जवलेकर ने व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. गोपालदत्त ओझा, अरविन्द ओझा, वीणा के संपादक राकेश शर्मा आदि काफी संख्या में उपस्थित थे।

साहित्यिक दुनिया में एक अनमोल योगदान कवयित्री नीलम सोनी की पुस्तक 'कश्ती'

सुप्रसिद्ध कवयित्री नीलम सोनी की बहुप्रतीक्षित काव्य- पुस्तक किश्ती का हाल ही में विमोचन हुआ, जिसने साहित्य जगत में एक नई ऊर्जा और भावनात्मक लहर पैदा कर दी है।

भावों की गहराई, अभिव्यक्ति की स्पष्टता और शिल्प की सादगी के साथ यह पुस्तक पाठकों के दिल को छूने वाली है। किश्ती केवल कविता संग्रह नहीं है, बल्कि यह उन भावनाओं की यात्रा है जो जीवन की लहरों में बहती, गमगाती और फिर संभलती हैं। नीलम सोनी की लेखनी में जहां एक ओर नारी मन की कोमलता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक चेतना की गंभीरता भी स्पष्ट रूप से उभरती है। उनकी कविताओं में आत्मा की आवाज़ सुनाई देती है कभी यह आवाज़ प्रेम की होती है, कभी संघर्ष की, कभी विरह की पी। तो कभी आत्मबल की प्रेरणा बनकर पाठकों से संवाद करती है। सरल भाषा, सशक्त प्रतीकों और सांस्कृतिक बिंबों से सजी किश्ती हर पाठक को अपने साथ बहा ले जाती है। यह पुस्तक आधुनिक संवेदनाओं और पारंपरिक मूल्यों के बीच सेतु की तरह काम करती है। नीलम सोनी ने अपनी सशक्त लेखनी से यह सिद्ध कर दिया है कि कविता केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज को आईना दिखाने का एक सशक्त माध्यम भी है। सभी साहित्य प्रेमियों और पाठकों के लिए किश्ती अवश्य पठनीय है। यह न केवल आपकी सोच को उद्बलित करेगी, बल्कि आपको खुद से और समाज से जोने का भी कार्य करेगी। नीलम सोनी की यह रचना हिन्दी साहित्य को एक नई ऊँचाई प्रदान करती है। किश्ती पढ़ना केवल एक पुस्तक पढ़ना नहीं, बल्कि एक भावनात्मक यात्रा पर निकलना है। आप भी 'किश्ती' पढ़कर साहित्यिक यात्रा का हिस्सा बनें।



सम्पादक।

विनीता सिंह चौहान बालसाहित्य सम्मान से अलंकृत

साहित्यकार, शिक्षिका सम्प्रति हिन्दी परिवार इंदौर की कोषाध्यक्ष विनीता सिंह चौहान को उनके बालकहानी संग्रह 'फूलों सी कहानियां' 'कृति पर भोपाल मध्यप्रदेश की प्रतिष्ठित संस्था बाल कल्याण एवं बालसाहित्य शोध केन्द्र द्वारा श्रीमती अरुणा निगम बाल साहित्यकार सम्मान राजुरकर राज दुष्यन्तकुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय सभागार में सस्थापक महेश सक्सेना, कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. कुंकुम गुप्ता मुख्य अतिथि पूर्व न्यायमूर्ति श्री मनोहर ममतानी, सारस्वत अतिथि राघवेंद्र शर्मा विशिष्ट अतिथि प्रो. सौरभ प्रकाश ने सम्मानपत्र, श्रीफल, शॉल एवं सम्माननिधि प्रदान की। इस उपलक्ष्य में हिन्दी परिवार इंदौर के अध्यक्ष हरeram बाजपेयी, सचिव संतोष मोहंती, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सदाशिव कौतुक, उपाध्यक्ष प्रदीप नवीन कार्यकारिणी सदस्य प्रमु त्रिवेदी एवं अन्य साहित्यकारों ने शुभकामनाएं दीं। ज्ञातव्य है कि विनीताजी की अब तक दो काव्य संग्रह और तीन कृतियां बालसाहित्य पर आ चुकी हैं एवं कई सम्मान से सम्मानित किया गया है।

काग भैया का व्यंग्य

'छत पर बैठ कर काग भैया कलयुगी गीता सुनायेगा'- वाह! काग काला, कर्कश, मौकापरस्त। कलयुग में वही तो उपदेशक बना बैठा है। असली संत मौन हैं, नकली ज्ञानी छत-छत चिल्ला रहे हैं।

'भरी भी मैं राधाकृष्ण सीताराम दोहरायेगा' - ये 'भी' ही तो समस्या है 'गगन' 'सीताराम' की रट तो है, पर राम का आचरण कहाँ? 'राधेश्याम' का शोर तो है, पर राधा का सम्मान और श्याम का प्रेम कहाँ आपने 'बुद्धिजीवी गंभीर हों', कहा था

'अंधभक्ति अच्छी नहीं होती'-

यही वो अंध भक्ति है।

'सब झूम उठेंगे अंध भक्त'- 'अंध' शब्द पर गौर किया। आधे भक्त, पूरे स्वार्थी। नाम जपने से पेट नहीं भरता, 'मैं मजदूर हूँ,' वाले को रोटी चाहिए, राम-नाम की चासनी नहीं। झूमने से क्रांति नहीं आती, जागने से आती है।

-गगन खरे, कोदरिया, महू



प्रखर वाणी

दीदी के गाल पर जड़ा बंगाल में तमाचा... चुनाव परिणाम देख हर भाजपाई नाचा...

तगे द्रुढ़ के बाद पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम आया...किसी को खला तो किसी को भाया...हर चुनाव में व्हील चेयर थामने वाली दीदी को मिल गई सक...नरम पेगा स्वभाव अब, जो हरदम रहा कक...तुष्टिकरण की नीति का अंत और भगवा संत हुआ...गली - गली में धुम मची, गांव - गांव बसंत हुआ...दीदी के दिल में मच गया भूचाल...वर्षों सत्ता में रही अब भाजपा का हुआ बंगाल...घुसपैठियों के सहारे सियासत पाई एसआईआर ने छांट दिया...टीएमसी ने बंगाल को धर्म आधार पर बांट दिया...छद्म और कुटिल वाणी से बरगलाना वाकसिद्ध था...रोहिंग्या घुसे बंगाल में जो सुभाष, विवेकानन्द, बंकिमचंद्र नाम प्रसिद्ध था...गुं, माफिया हिंसक बन हिंदुनिष्ठों को मारते रहे...अनेक निहत्थों की हत्या को दुष्ट दम्भी स्वीकारते रहे...सनातनी पर तनातनी करने वाले सदा परास्त होते हैं...सूरज के सम्मुख गर्दिश के सितारे भी अस्त होते हैं...हार को भांपकर ईवीएम पर छेड़खानी का आरोप पुराना है...भारत के प्रिय बंगाल में हिंसक प्रोत्साहन अंत, नया युग प्रारम्भ...जहां से वंचित रही वहां भी

भाजपा सत्ता का करेगी शुभारम्भ...मोदी ने मुखर्जी के सपने को साकार किया...श्यामाप्रसाद बलिदानी को बंगाल में वन्दनवार दिया...दीदी के दम्भ को दम लगाकर चकनाचूर किया...झालमु ख़ाकर प्रचार भी प्रचुर किया...मोदी - शाह की जोी, जो - घटाव में माहिर है...पैनी निगाह प्रबंधन की उनकी जगजाहिर है...भाजपा की यह जीत वर्षों से बलिदानियों का जुनून है...पश्चिम बंगाल में हर रोज बहा कई भाजपाइयों का खून है...सफलता चरण चुमती सदा निष्ठा और हिफाजत की...जीत सच्ची श्रद्धांजलि है, स्वयंसेवक शहादत की...दीदी के गाल पर ज़ा बंगाल में तमाचा...चुनाव परिणाम देख हर भाजपाई नाचा...खुशियों की बरसात हुई, नाच उठा कंकाल...सदैव रहेगा देश में टूटेगा नहीं बंगाल...थो।

शुद्धिकरण हो गया थो। अब भी बाकी है...भाजपा के नीति नियंताओं की सर्वव्यापी झांकी है...जीत को बरकरार रखना सबसे बी. चुनौती है...अहंकार और गलत चयन सत्ता के लिए पनौती है...ये जीत आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर महत्वपूर्ण है...इसको स्थायी बनाये रखने हेतु कर्मठ सियासत जरूरी है नहीं तो जीत अपूर्ण है...बंग भंग करने वालों को अब निश्चित खदेड़ा होगा...देशद्रोहियों के विस्थापन की जांच का अनुष्ठान छेड़ा होगा...पश्चिम बंगाल दिल्ली की कुर्सी का ट्रायल है...सिद्ध हुआ जनता आज भी मोदी की ही कायल है...

प्रो. डॉ. श्याम सुन्दर पल्लोड
लेखक, कवि एवं वक्ता
4, श्रीराम मंदिर परिसर,
सुदामा नगरी-सेक्टर, इंदौर
(म प्र) स्वरदूत-
9893307800

अग्रवाल मावा भण्डार

1036, छोटा बाजार, महू (म.प्र.)

सहयोगी प्रतिष्ठान...

- श्याम ऑईल इण्डस्ट्रीज, पिगडम्बर, महू
- जय अम्बे दाल मिल, पिगडम्बर, महू



अध्यात्म

(किश्त 83)

दयानन्द का प्रकाश

(गतान्क से आगे)

हंसी में शिक्षा

(4) स्वामी जी एक बार थाल में भोजन कर रहे थे। उधर से एक सन्यासी (फकीर) आ निकला। वह स्वामी जी को देखकर कहने लगा कि आप सन्यासी होकर धातु के थाल में भोजन कर रहे हैं। सन्यासी के लिए तो धातु छूना तक माना है।

स्वामी जी चुप रहे। परंतु वह साधु फिर वही बात कहने लगा। जब स्वामी जी भोजन खा चुके तो उन्होंने उस साधु के उस्तरे से घुटे हुए सिर पर हाथ फेर कर कहा - क्या तुम्हारा सिर जूते से मुं गया था। वह साधु वह साधु चुप रह गया।



स्वामी दयानंद सरस्वती भारत के उन महान राष्ट्र भक्तों, ऋषियों में से एक थे जिन्होंने मानवता का पाठ सारे विश्व को पाया। विश्व बंधुत्व के साथ-साथ पाखंड, अंधविश्वास, अविद्या, जाति-पांति छुआ-छूत के भेद को मिटाने के लिए लोगों को सत्य ज्ञान से अवगत कराया। सत्य ज्ञान से ही मानव का उद्धार संभव है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज को एक ईश्वर की उपासना करने का मंत्र दिया। -सम्पादक

(5) एक पंति ने स्वामी जी के सामने मिश्री और रुपया रखकर कहा, महाराज, आप तो इस कली-काल में साक्षात विष्णु का अवतार हैं।

स्वामीजी, 'मैं तो पहले ही 10 अवतारों को नहीं मानता, आप मुझे 11वां अवतार बनाना चाहते हैं।'

इसके बाद पंति जी की बगल में दबाये हुए कथा के आसन की ओर संकेत करके स्वामी जी ने पूछा, यह क्या है?

पंतिजी, खाने-कमाने की चक्की।

स्वामीजी, 'यदि चक्की ही चलना है तो सत्य की चक्की चलाओ। खाने को अपने आप मिल जाएगा।'

(6) कुछ लोगों ने सोचा कि स्वामी जी सबको निरुत्तर देते हैं, आज उन्हें निरुत्तर करना चाहिए। उन्होंने स्वामी जी से यह पूछने की ठानी कि आप ज्ञानी हैं या अज्ञान? यदि स्वामी जी ने कहा, मैं ज्ञानी हूँ, तो हम कहेंगे कि आप अभिमानी हैं। और यदि कहा कि मैं अज्ञानी हूँ, तो हम कहेंगे कि आप स्वयं अज्ञानी

हैं, दूसरों को क्या ज्ञान सिखा सकते हैं? यह सलाह करके वे स्वामी जी के पास गए और उन्होंने पूछा,

'महाराज, आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं?' स्वामी जी ने उत्तर दिया, मैं कई बातों में जानी हूँ और कई में अज्ञानी। जैसे वेद-शास्त्र आदि में ज्ञानी हूँ, परंतु अरबी, फारसी और अंग्रेजी आदि भाषाओं में अज्ञानी।

वे लोग चुप रह गए।

शेष अगले अंक में

गतान्क से...

स्तम्भ-एक शिक्षाप्रद कहानी

माता-पिता की सेवा करो

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भी आदर्श पितृ भक्त थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने उनके संबंध में लिखा है-
प्रातः काल उठि के रघुनाथा
मातु पिता गुरु नावहि माथा
पिता के तनिक-से संकेत पर श्री राम राजपाट को छोड़ वनों में चले गए।

महात्मा भीष्म! उनका त्याग क्या किसी से कम है? अपने पिता की इच्छा पूर्ति के लिए आपने भीष्म प्रतिज्ञा की कि मैं आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करूंगा। तभी तो आप देवव्रत से भीष्म बने।

ये जीवनियाँ हमें माता-पिता की सेवा करने का पाठ पढ़ा रही हैं। ये जीवनियाँ हमें भी उद्धोधन दे रही हैं और हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर रही हैं। हमें भी इन्हीं आदर्शों पर चलकर माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

● माता-पिता की सेवा से सब कुछ मिल सकता है। इस विषय में एक घटना उल्लेखनीय है। एक बार एक युवक श्री रामकृष्ण परमहंस जी के पास पहुंचा और उससे दीक्षा देने की प्रार्थना की। उन्होंने मुस्कुरा कर पूछा, 'क्या तुम अकेले हो? तुम्हारे घर में कोई नहीं?'
● 'बस एक बूढ़ी मां है महाराज।'
● 'फिर तुम दीक्षा लेकर सन्यासी क्यों बनना चाहते हो?'
● 'मैं संसार को त्याग कर मोक्ष चाहता हूँ।'
● परमहंस जी ने बे प्रेम से समझा कर कहा, 'बेटा! अपनी बूढ़ी मां को असहाय छोड़ मोक्ष नहीं मिल सकता। जाओ, दिल लगाकर अपनी माता की सेवा करो! इसी में तुम्हारा कल्याण है, इसी से तुम्हें मोक्ष मिल जाएगा।' **संकलन-राजकुमार प्रजापति**

स्तम्भ-पहला सुख निरोगी काया

भ्रमण करें नितभोर में

प्रतिदिन नियमित रूप से एक घंटा टहलें। टहलते समय बातें न करें। टहलने से मांसपेशियां सक्रिय होती हैं, शरीर में चुस्ती बनी रहती है। यह कितना सस्ता सौदा है-

'एक लगावे 23 पावे'

यानि एक घंटा जब हम टहलते हैं तो एक घंटे का टहलना हमारे शरीर को ही नहीं वरन् हमारे मन-मस्तिष्क को भी शेष 23 घंटे चुस्त एवं दुरुस्त रखता है। अतः टहलने को जीवन का अंग बना लेना, तन और मन दोनों के लिए उपयोगी है।

जल पीकर के शौच जा, टहल मील दो मील।

इससे होगी आपकी, कई व्याधियाँ क्षीण।।

यह सोचना की टहलने में समय नष्ट हो रहा है अपने स्वास्थ्य के साथ अन्याय है, बेईमानी है। बढ़ई अपने औजारों की धार रखने में एक घंटा समय लगता है क्योंकि वह जानता है कि उसके वे औजार तब ही अधिक तेज और शीघ्र कार्य करते हैं। इसी प्रकार शरीर से अधिक काम लेने के लिए टहलना आवश्यक है टहलने से घुटनों के जो सुचारू रूप से कार्य करने लगते हैं। जो लोग बी.हुई तौंद से परेशान हैं अथवा मधुमेह से पीड़ित हैं उनके लिए टहलना किसी वरदान से काम नहीं है।

सुबह की सैर में गति तेज होनी चाहिए। श्वास लंबी और गहरी लें। प्रातः तेजी से भ्रमण करने से पसीना अधिक निकलता है जिसका अर्थ है शरीर के विजातीय तत्वों का शरीर से बाहर निकल जाना। प्रातः काल के समय पेट खाली होता है और फेफों में ऑक्सीजन आसानी से और अधिक मात्रा में भीतर खींची जा सकती है।

आरामदायक जीवन शैली के स्थान पर श्रमशील जीवन शैली अपनाये। कार्यालय (office) में या अन्य स्थान पर जहां भी संभव हो, लिफ्ट के स्थान पर सीढ़ियों का प्रयोग करें। छोटे बच्चों बच्चों के साथ खेलें। मनोरंजन का कोई अवसर न छोड़ें! घर की बागवानी या अन्य कार्यों में समय लगायें। -सम्पादक

चाणक्य सूत्र

अर्थस्य मूलं राज्यम्

अर्थ का मूल है-राज्य। अर्थात् राज्य की सहायता अथवा व्यवस्था के बिना धन संग्रह करना कठिन है। धन संग्रह के लिए राज्य में स्थिरता और शांति स्थापित होना अत्यंत आवश्यक होता है। जब तक राज्य में अशांति रहती है तब तक राज्य संपन्न नहीं हो सकता।

जिन देशों अथवा राज्यों ने अपने प्रयत्नों द्वारा देश को विकसित और संपन्न बनाया है, उसमें वहां की सरकारों की प्रमुख भूमिका रही है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य अथवा सरकार व्यापारियों को अनेक प्रकार की सुविधा प्रदान करती है, जिससे राज्य संपन्न होता है। आज के विकसित राष्ट्र इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने अपने व्यापारियों अथवा उद्योगपतियों को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया अर्थात् यह बात स्पष्ट है कि किसी देश के लोगों का संपन्न होना उस देश की शासन व्यवस्था पर निर्भर होता है।

स्तम्भ



हँसना मना है



(1) एक कवि सम्मेलन में बाल कवि बैरागी अपना गीत पढ़ रहे थे। बीच में एक श्रोता ने उन्हें रोक कर अनुरोध किया, 'कृपया अपने गीत की इस लाइन को 'जागते रहना, आया हूँ मैं जगाने' आप तब तक पढ़ते रहिए जब तक सवेरा ना हो जाये।'

'क्या आपको यह लाइन बहुत पसंद आई है?'

नहीं, बात यह है कि मोहल्ले का चौकीदार छुट्टी पर गया हुआ है।

हाँ..... हाँ..... हाँ.....।

(2) जूते की दुकान पर एक ग्राहक ने दुकानदार से कहा-'जनाब मेरे पास रु.10 कम हैं, मैं फिर दे जाऊंगा।'

दुकानदार-'माफ कीजिए, मैं।

सेल्समेन-'दे दीजिए रु. 10 दे जाएंगे।'

ग्राहक जूते लेकर चला गया, तो मालिक ने पूछा- तुम उसे जानते हो?'

'जी नहीं। लेकिन वह आएगा जरूर ; क्योंकि मैंने एक ही पर के दोनों जूते दे दिये हैं। हाँहाँ.....हाँ।

-रंजीत, महू

संदीप राशिनकर के रेखांकन फीचर की पुस्तक पुणे में लोकार्पित

इंदौर। अपनी विशिष्ट रेखांकन शैली से राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाने वाले शहर के चित्रकार संदीप राशिनकर की रेखांकन फीचर की पुस्तक 'संदीप राशिनकर के विशेष रेखांकन फीचर' का पुणे में उनके पोते शौर्य द्वारा लोकार्पण किया गया। डॉ. बागेश्री, श्रीति, विकास पाठक, मेघना, श्रैयस की उपस्थिति में आयोजित इस आत्मीय कार्यक्रम में लोकार्पित इस कृति में संदीप के नवाचार 'रेखांकन फीचर' की वृहद श्रृंखला का संयोजन किया गया है। म्यूरल्स, ब्रास/स्टील वेंचर जैसे कला में किए गए अपने नवाचारों से चर्चित संदीप का रेखांकन फीचर भी एक नवाचार है जिसमें विषय केंद्रित रेखांकनों के सृजन और संयोजन से कलाभिव्यक्ति का एक अलहदा वितान रचा जाता है। श्री गोविंद मूढ़ा के संपादन में निकलने वाली चेन्नई की विशिष्ट पत्रिका 'पुष्पांजलि' में विगत कई वर्षों से विशेष रूप से निरंतरता में प्रकाशित संदीप के इस कलाविष्कार को कृति में संकलित किया गया है। विभिन्न विषयों पर केंद्रित इन विशिष्ट रंगीन रेखांकनों की श्रृंखला पाठक को एक नया कला आस्वाद देती है।



कविता

मजदूर

मैं एक औरत एक मजदूर ही तो हूँ,
थकती हूँ पर किसी को नज़र नहीं आती हूँ।
बिन पैसे कि चाकर ही तो हूँ, जिंदगी भर पसीना बहाती हूँ,
किसी को मेरी फिक्र नहीं पर मैं सबके लिए जीती हूँ।
सबको खुशियाँ थमाते हूँ पर खून के आँसू पीती हूँ,
सुबह 5 बजे बिना अलार्म के उठ जाती हूँ।
खुद से बेफिक्र सबकी पसन्द का खिलाती हूँ,
थकी हारी खुद कई बार भूखी सो जाती हूँ।
मगर फिर अगली सुबह जिम्मेदारियों
के साथ खुद को उठाती हूँ,
आँखों के आँसू छिपाए अपना फर्ज निभाती हूँ।
कई खामियाँ मुझ में बतायी जाती है,
खरी-खोटी मुझको कई बार सुनाई जाती है।
पर हर जख्म हँस के सह जाती हूँ,
जी हाँ मैं भारतीय नारी कहलाती हूँ।

- 'नीलम सोनी,
फॉर्म ब्यावर
राजस्थान



महू में 15 दिवसीय निशुल्क क्राफ्ट प्रशिक्षण शिविर जारी

बच्चों को मिल रहा रचनात्मक कौशल का प्रशिक्षण

दूसरे चरण के लिए 15 मई से रजिस्ट्रेशन प्रारंभ

महू। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, दिल्ली के आंचलिक कार्यालय महू द्वारा आशा कला केंद्र महू में 15 दिवसीय निशुल्क क्राफ्ट प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया जा रहा है। शिविर के प्रथम चरण में बच्चों को विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

केंद्र की प्राचार्य कमलेश पिंपलेकर

ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रशिक्षण के दौरान बच्चों को कटिंग, पेंसिल चलाना, रंग भरना सहित फ्लायर, पंखा और विभिन्न प्रकार की नाव बनाना सिखाया गया और अनेक चीजे सिखाई जाएंगी। बच्चों ने इन गतिविधियों को पूरे उत्साह और रुचि के साथ सीखा। यह शिविर 18 मई तक चलेगा। इसके दूसरे चरण की शुरुआत भी शीघ्र की जाएगी, जिसके लिए 10 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों का पंजीयन 15 मई से प्रारंभ होगा। इस प्रशिक्षण

कार्यक्रम में कुल 6 सेमेस्टर आयोजित किए जाएंगे, जो पूरी तरह निःशुल्क रहेंगे। सीमित स्थान होने के कारण समय पर पंजीयन कराने की अपील की गई है। संघ के महामंत्री सुरेश खेल्वाल ने बताया कि जल्द ही संस्था द्वारा निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण भी शुरू किया जाएगा। साथ ही क्राफ्ट एवं कंप्यूटर प्रशिक्षण में भाग लेने वाले बच्चों को संघ की ओर से प्रमाण पत्र भी प्रदान किए जाएंगे। यह शिविर पूर्ण रूप से निःशुल्क रहेंगे।

विनोद टांक ने बैमिंटन में राष्ट्रीय स्वर्ण पदक जीतकर बढ़ाया महू का मान

महू। रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत रक्षा संपदा, मध्य कमान लखनऊ द्वारा आयोजित बैमिंटन प्रतियोगिता में छावनी परिषद महू के खिलाड़ी विनोद टांक ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सिंगल्स वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने फाइनल मुकाबले में रानीखेत छावनी परिषद के खिलाड़ी को पराजित कर खिताब अपने नाम किया।

प्रतियोगिता के अगले चरण में रक्षा संपदा महानिदेशालय, नई दिल्ली द्वारा दिल्ली छावनी स्थित पी.वी. सिंधु स्टेडियम में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें देशभर के 61 छावनी परिषद और 34 रक्षा संपदा कार्यालयों के खिलाड़ियों ने भाग लिया। यहां भी विनोद टांक ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए लगातार सभी मुकाबले जीतकर फाइनल में प्रवेश किया।

फाइनल मुकाबले में उन्होंने फिरोजपुर छावनी के खिलाड़ी को हराकर राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस उपलब्धि पर उन्हें रक्षा संपदा महानिदेशालय, नई दिल्ली द्वारा गोल्ड मेडल और शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया।

उनकी इस सफलता पर मुख्य अधिशासी अधिकारी महू, कार्यालय के अधिकारी - कर्मचारियों, सामाजिक संस्थाओं एवं शहर के गणमान्य नागरिकों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।



‘धूप-गर्मी में अम्बुआ की छाँव हो तुम’

मध्यप्रदेश लेखक संघ, इंदौर इकाई व श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित गत माह की मासिक काव्यगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्य समिति के प्रधानमंत्री अरविंद जवलेकर जी ने की। साहित्यकारों ने वैशाख की तपन में पावस के झोंकों-सी रचनाएँ सुनाकर आनंद बटोरा। कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा कृष्णा की सरस्वती वंदना से हुआ। उन्होंने कुछ मुक्तक भी सुनाए। एक जिसकी एक बानगी-

‘साँप और बिच्छू की आदत लेकर चलते हैं लोग।

गिरगिट से ज़्यादा रंग बदलते हैं लोग।’

डॉ. सूर्यकांत गुजराती ने पढ़ा ‘आज फिर सूर्य के उदय के साथ साक्षी होना है तुम्हारे संग।’

दीपक शिरालकर ने वर्ष के अंत को रेखांकित करती रचना पढ़ी-

‘यादें सिमटते-सिमटते वर्ष समाप्त हो गया।’

उन्होंने वृद्ध माता-पिता के दर्द और प्रतिभा पलायन पर भी अपनी बात रखी। गीतकार सुरेंद्र व्यास ‘सरल’ के तेवर कुछ यों रहे- ‘कितना ही कोसा है उसको, कभी नहीं खफा रहा।’

वरिष्ठ साहित्यकार सदाशिव कौतुक ने अपनी रचना ‘स्पर्श’ के माध्यम से कहा कि ‘एक दिन पीले पत्तों की तरह बिखर जाना है।’ उन्होंने वैचारिक कविता या प्रगतिशील कविता की बात करते हुए स्थापित रचनाकारों को पढ़ने का परामर्श दिया।

डॉ. रेखा मण्डलोई ने सम-सामयिक रचना पाठ करते हुए भगवान परशुराम के छठे अवतार पर सुंदर रचना पाठ किया। श्रीमती जयश्री उपाध्याय ने मानस का संदर्भ लेते हुए ‘बुद्धि और विवेक’ पर अपना आलेख पढ़ा। निमी के सशक्त हस्ताक्षर शिशिर उपाध्याय ‘निमाया’ ने गर्मी पर एक गीत सुनाया।

‘धूप-गर्मी में अम्बुआ की छाँव हो तुम।’

शायर रशीद अहमद रशीद की गज़ल का एक शेर है --

‘दुनिया की बेरुखी ने अच्छा किया,

तकदीर के तमाम सितम याद आ गए।’

वरिष्ठ साहित्यकार हरeram बाजपेयी ने कुशल संचालन करते हुए अपनी रचना में युद्ध कभी समाप्त नहीं होने की बात कही। अध्यक्षीय उद्बोधन में समिति के प्रधानमंत्री अरविंद जवलेकर ने मराठी रचना का हिंदी रूपांतरण सुनाकर विचार व्यक्त किए। इकाई अध्यक्ष प्रभु त्रिवेदी ने भावनाप्रधान दोहे व गीत सुनाकर आभार व्यक्त किया।

मैं काटना चाहता हूँ विषवृक्ष को

यह कथन हिन्दी परिवार इंदौर एवं श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर के संयुक्त तत्वाधान में समिति के पुस्तकालय सभागार में आयोजित मासिक साहित्यिक गोष्ठी श्रोता संवाद में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. अशोक कुमार भार्गव (पूर्व आईएएस) ने अपनी कविता में अभिव्यक्त किया। ‘लोग मुझे समाज विद्रोही कहते हैं, क्योंकि मैं काटना चाहता हूँ उस विषवृक्ष को जिसकी जें, सोखती हैं लहू मानवता का’। उनका तात्पर्य था समाज में पनप चुके वैमनस्यता, कुरीतियों, भ्रष्टाचार व नैतिक-पतन के विषवृक्ष को समूल नष्ट करना।

साहित्यिक गोष्ठी का शुभारंभ डॉ. शशि निगम द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ।

अंजलि मिश्रा ने अपनी कविता में कहा-

‘मेरा हर एक चलन निराला है। मैंने हर गम को खुशी में ढाला है।’

सुषमा शुक्ला ने कविता में कहा- ‘शब्द नहीं एहसास लिखा है। जो कुछ मेरे पास लिखा है ‘

अनिल ओझा ने महंगाई पर गीत पढ़ा-

भीषण महंगाई और खर्च जानलेवा। जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।

रशीद अहमद शेख ने कविता द्वारा विश्व में चल रहे युद्ध पर संकेत करते हुए कहा-

‘हो अहिंसा विश्ववापी अब न कोई युद्ध हो’

सअशोक कुमार गर्ग की कविता रोटियों के महता पर केन्द्रित रही-

‘समझो न सिर्फ पेट ही भर्ती है रोटियाँ। जीवन में कुछ कमाल भी

करती है रोटियाँ।’

वरिष्ठ साहित्यकार सदाशिव कौतुक ने अपनी लघु कथा -‘जखम’ से सबको प्रभावित किया।

डॉ. बुलाकार ने कविता-खिड़की का पाठ किया जो जीवन के यथार्थ को उजागर कर रही थी।

सन्तोष मोहन्ती की जबलपुर के बरगी बांध में हुए कूज दुर्घटना पर केन्द्रित कविता माँ-पुत्र के मार्मिक चित्र चित्रांकन करती रचना सुनाकर सभी को भावुक कर दिया।

हिन्दी परिवार के अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य समिति के प्रचार मंत्री पं. हरeram बाजपेयी की कविता-

‘कुछ पाने की अभिलाषा में जो था वो भी खो बैठे’-खूब पसंद की गयी।

इसके अलावा अन्य साहित्यकारों -राम आसरे पों, सुरेन्द्र व्यास, शिशिर उपाध्याय, डॉ. अरुणा सराफ, कमल

कासलीवाल, डॉ. सूर्यकांत गुजराती, ओम उपाध्याय, भीमसिंह पँवार,



प्रदीप नवीन, उर्मिला राइकवार, डॉ. रमेश चन्द्र आदि ने भी अपनी रचनाओं में विविध विषयों की प्रासंगिकता को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पंति रामचंद्र दुबे सहित कई सुधिजन श्रोता के रूप में भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शैली भागवत ने किया तथा आभार हिन्दी परिवार के सचिव सन्तोष मोहन्ती ने व्यक्त किया।



Dr. Sakina. M. Kanchwala

B.P.T.M.I.A.P.B.E.M.S.,M.D.E.H.,C.C.M.T.

**CONSULTANT
PHYSIOTHERAPIST**

S.M. PHYSIOTHERAPY & FITNESS CENTER

Clinik TIMING

11.00 AM TO 2.00 PM

Gym TIMING

5.00 PM To 8.00 PM

9.30 AM To 8.00 PM

75, Main Street, Mhow ph- 07324-273009

सभी प्रकार के कमर के बेल्ट, वॉकर, छड़ी, कंधे के बेल्ट, बच्चों के बेल्ट, श्रवण यंत्र आदि उपलब्ध किफायत दाम में

बंगाल को सोनार बांग्ला बनाने में रुपये खर्च होंगे 20,000 करोड़

बंगाल सराज्य में भाजपा ने घोषणा पत्र में कई बड़े वादे किए थे। अनुमान लगाया जाए तो इन पर होंगे होने वाले कुल अनुमानित खर्च 1.2 लाख करोड़ से 1.5 लाख करोड़ रुपये प्रति वर्ष पहुंच सकता है। जबकि अंतरिम बजट में वित्त वर्ष 2026-27 के लिए राजकीय घाटा 62,423 . 36 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है। यह राज्य के बजट पर भारी दबाव डाल सकता है। सबसे बड़ा वित्तीय बोझ महिलाओं को हर माह रु. 3000 देने की योजना से पढ़ सकता है। लगभग दो करोड़ महिलाएं योजना के दायरे में आएंगी तो लगभग सालाना खर्च 72000 करोड़ रुपये बैठता है।

वहीं बेरोजगार युवाओं को 23000 प्रति माह भत्ता देने का वादा किया गया है। यदि 50 लाख युवा लाभ लेते हैं तो सालाना 18, 000 करोड़ खर्च होंगे। वहीं 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली देने और 10 शहरों में

बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 30,000 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना है। कोलकाता को भविष्य का शहर बनाने के लिए 22,000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। सड़कों के विकास के लिए केंद्र के साथ मिलकर एक लाख करोड़ रुपये खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। भूमिहीन किसानों को सालाना 24000 देने, 20,000 करोड़ रुपये का कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड बनेगा। किसानों के लिए 5000 करोड़ रुपये का फंड प्रस्तावित है। इसी प्रकार कर्मचारियों के लिए सातवें वेतन आयोग को लागू करने और महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का असर भी राज्य के वित्त पर पड़ेगा। विशेषज्ञों के अनुसार इससे सालाना करीब 15,000 से 20,000 करोड़ का अतिरिक्त बोझ आ सकता है।

इस प्रकार सोनार बांग्ला खड़ा करने के लिए भाजपा सरकार को झोंकनी होगी पूरी ताकत।

शासकीय भवन और आवास योजना के घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग अनिवार्य

इंदौर। जल गंगा संवर्धन अभियान में जल स्रोतों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जल संरक्षण और संवर्धन के इस अभियान में अब आम नागरिकों के साथ-साथ कॉरपोरेट और सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से जिले में पुरानी बावड़ियों और कुओं का जीर्णोद्धार उन्हें पुनः उपयोगी और आकर्षक बनाया जा रहा है। साथ ही शासकीय भवनों और प्रधानमंत्री आवास योजना के घरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग अनिवार्य करने के कलेक्टर शिवम वर्मा ने निर्देश दिए। तालाबों को रोजगार से जोड़ने के निर्देश भी दिए गए हैं।

जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान

की प्रगति पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में बताया गया है कि वर्ष 2026-27 के दौरान जल संरक्षण के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कार्य किये जा रहे हैं। विभिन्न संस्थाओं द्वारा 15 बावड़ियों का जीर्णोद्धार और 10 कुओं का सुधार कार्य किया जा रहा है। वहीं पौधारोपण करने के साथ ही रूप वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम वितरित किये जा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों के सहयोग से तालाबों के गहरीकरण का कार्य जहां सबसे ज्यादा नाम कटे वहीं टीएमसी का दबदबा कायम एसआईआर के दौरान पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद-मालदा बेल्ट की जिन 10 सीटों पर सबसे ज्यादा वोटर के नाम काटे गए वहां टीएमसी का दबदबा

जारी है। पिछले वर्ष अमृत सरोवर अभियान के तहत 101 तालाब बनाए गए थे, वहीं 392 जल संरक्षण कार्य पुष्कर धरोहर योजना और 713 कार्य जल गंगा अभियान के तहत पूरे किए।

गए इस वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में 5000 और शहरी क्षेत्र में लगभग 25,000 जल संरचनाएं विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है। कलेक्टर वर्मा ने निर्देश दिए की सभी कार्य बरसात से पहले पूर्ण किए जाएं।

जहां सबसे ज्यादा नाम कटे वहीं टीएमसी का दबदबा कायम

कायम रहा है। हालांकि जीत का अंतर काफी कम हो गया है। एस आई आर को लेकर राज्य में बवाल मचा था और कई इलाकों खासकर मुर्शिदाबाद मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र में बड़ी संख्या में नाम काटने के आरोप लगे। समसेरगंज विधानसभा सीट पर सबसे अधिक 74000 से ज्यादा नाम हटे थे। 'आने वाली समय में कड़ा हो सकता है मुकाबला' मुर्शिदाबाद-मालदा की इन सीटों पर टीएमसी की पकड़ अब भी है। हालांकि घटते मार्जिन यह भी बता रहे हैं की मुकाबला अब पहले से ज्यादा कड़ा हो रहा है। जो भविष्य की राजनीति में नजर आएगा।



प्रतापगढ़ी, राज्यसभा सदस्य प्रो मनोज कुमार झा, वक्ता डॉ महेंद्र सिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल मनोज कुमार सिंह (सेवानिवृत्ति), पर्यावरण विद् प्रो. श्याम सुंदर ज्ञानी और लेफ्टिनेंट जनरल माधुरी कानिटकर (से.नि.) अपने विचार रखेंगे। कार्यक्रम का उद्घाटन शनिवार 16 मई को इमरान प्रतापगढ़ी के व्याख्यान से होगा।

निमंत्रण पत्र और पोस्ट का हुआ विमोचन- व्याख्यान माला के निमंत्रण पत्र और पोस्ट का विमोचन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ योगेशचंद्र गोस्वामी और विशेष अतिथि के रूप में प्रेस क्लब महासचिव प्रदीप जोशी शामिल हुए।

कार्यक्रम का संचालन पं. हरेश्वर बाजपेयी ने किया व आभार रामेश्वर प्रसाद गुप्ता ने माना। इस अवसर पर अनेक गण्यमान्य जन मौजूद रहे।

छपते -छपते

चुनाव परिणाम के स्पष्ट होते संकेत...?

आर्य रामलाल प्रजापति

पांच राज्यों में सम्पन्न विधानसभा चुनावों के परिणामों ने जो संकेत दिए हैं उनसे स्पष्ट है कि इन विधान सभाओं में, चुनाव के पूर्व जो स्थिति थी, वह ठीक नहीं थी। जनता त्रस्त थी, भयभीत थी। भय और आतंक के माहौल में जनता रह रही थी। आये दिन झगड़े अत्याचार, अन्याय आदि से जनता त्रस्त थी? न विकास था, न रोजगार के संसाधन थे।

इसी प्रकार पश्चिम बंगाल में हर क्षेत्र में कहीं न कहीं भय, दुष्कर्म, व्यभिचार, लूट, हत्या, पेड़ पर लटकी लाश के दृश्य आम थे। अत्याचार, लूट से जनता त्रस्त थी। वहीं कार्य कर्ताओं की हत्याओं ने भी जनता को जागृत किया, और इसी का परिणाम पश्चिम बंगाल में जनता ने सत्तासीन तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से ही हटा दिया।

पश्चिम बंगाल के चुनाव ने पूरे देश में यह संकेत दिया कि जो राजनीतिक दल जनता के हितों की उपेक्षा करेगा, राष्ट्र की मुख्य धारा से नहीं जुगाड़, कल्याणकारी योजनाओं की उपेक्षा करेगा, जनता उसका ऐसा ही हथ करेगी।' यह बा. संकेत है सभी राजनीतिक दलों के लिए।'

यह भी स्पष्ट संकेत है कि बंगाल में महिलाओं की नाराजगी थी, एक ओर घुसपैठिए बंगाल की जनता का हक छीन रहे थे। दूसरी ओर वे राष्ट्र के लिए खतरा भी थे। उन्हें अप्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक लाभ व समर्थन मिल रहा था, जो वहाँ की जनता के हक पर आका था। देर से ही सही, मौका मिलते ही जनता ने अपने मताधिकार से राजनीतिक दलों को बड़ा संदेश दिया है।

चुनाव में भाजपा को समर्थन देकर महिलाओं ने भरोसे को समझा, भय से मुक्ति का एहसास किया। उन्होंने एक ऐसी लीर शिप को पसंद किया जिसके माध्यम से पश्चिम बंगाल में लोग भय मुक्त होकर जीवन यापन करेंगे। घुसपैठियों को देश से निकाला जायेगा। राष्ट्र के विकास में और देश की समृद्धि में महिलाओं का योगदान अभूतपूर्व होगा। महिलाओं की इज्जत से खेलने वालों को कठोर दंड मिलेगा। इसी परिवर्तन के लिए बंगाल की जनता ने भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट बहुमत देकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकास और राष्ट्र प्रमुख की भावना को पसंद किया।

इसी प्रकार असम में भी प्रदेश की जनता ने एक बार पुनः भाजपा की विकास की रीति- नीति व कार्यों से प्रभावित होकर राष्ट्रवाद के लिए हैट्रिक लगाई है। असम की जनता सुशासन से प्रभावित है, और वह राष्ट्र हित की नीतियों को पसंद करती है।

पुचेरी की जनता ने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुशासन, राष्ट्रवाद, राष्ट्र प्रथम की भावना और राष्ट्र में जनकल्याणकारी कार्यों को गति प्रदान करने के लिए बहुमत प्रदान करते हुए भाजपा को सत्तासीन किया है।

तमिलनाडु में नायक से जननायक बने विजय ने 50 साल बाद राज्य की द्रवि राजनीति को बड़ा झटका दिया है। विजय ने द्रवि राजनीति के पारंपरिक ध्रुव को भी तोड़ दिया। वे 108 से बहुमत के लिए जरूरी 118 सीटों के आकड़े की ओर बढ़ते हुए अपना दावा पक्का कर रहे हैं। इधर केरल में कांग्रेसीनीत यूीएफ की 10 साल बाद पुनः सत्ता में वापसी हुई है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पांचों राज्यों की विधान सभा चुनावों में जनता ने भय, आतंक, व्यभिचार, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ वोट दिया है। विकास, राष्ट्रवाद की राजनीति को पसंद किया है। यद्यपि तमिलनाडु और केरल दो ऐसे राज्य हैं जहाँ भारतीय जनता पार्टी अभी अपना मुकाम हासिल न कर सकी है, किंतु उसके द्वारा इन राज्यों में दस्तक दे दी है। द्वार खट-खटा दिया है कि हम आ रहे हैं।

स्वाद और शुद्धता के लिए कृत संकल्पित

MHOW (KISHANGANJ)

9199931 31333

07324 276163

INDORE

+9199819 93213

0731 4963213

MHOW

07324 273213

07324 275811

भंवरीलाल

सन् 1945 से R c



मिठाईवाला

Bhanwarilal

Mithaiwala

■ मिठाई

■ नमकीन

1077, Chhota Bazar, MHOW (M.P.) Ph.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक आर्य रामलाल प्रजापति के लिए राजा ऑफसेट प्रिन्टर्स, 863/9, नेहरू नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं हरिफाटक, महू-इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक - आर्य रामलाल प्रजापति* मो. 9826493447, मो. 9826940210 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)